|b09291 54malmpF (English)

|c09291_000_54malmp.xml (Task 178438)

|v1

रविवार का दोपहर सत्र

|v2

जनरल सम्मेलन

|v3

रविवार का दोपहर सत्र

|v4

3 अक्टूबर 2010

|v5

आपकी आत्मा को विश्राम मिले

|v6

शान्ति

|v7

जनरल सम्मेलन

|v8

आपकी आत्मा को विश्राम मिले

|v9

एल्डर पर जी. माम द्वारा

|v10

सत्तर के

|v11

अपनी आत्माओं के लिए विश्राम पाने में मन और हृदय की शान्ति शामिल है, जोकि मसीह के सिद्धान्त को सीखने और उनका अनुसरण करने का परिणाम है ।

|v12

गोथनबर्ग शहर के बीच, स्वीडन में, एक चौड़ा मार्ग है जिसके दोनों तरफ सुन्दर पेड़ लगे हैं । एक दिन उनमें से एक बड़े पेड़ के तने में मैंने एक छेद देखा, उत्सुकतावश मैंने उसके अन्दर झांका और देखा कि पेड़ अन्दर से बिलकुल खोखला था । हां खोखला, लेकिन खाली नहीं ! इसमें दुनियाभर का कचरा भरा हुआ था ।

|v13

मुझे आश्चर्य हुआ कि वह पेड़ फिर भी सीधा खड़ा हुआ था । इसलिए मैंने ऊपर देखा और पाया एक चौड़ी ईस्पात की बेल्ट उसके तने के ऊपरी हिस्से से बन्धी हुई थी । उस बेल्ट से ईस्पात के कई तार जुड़े हुए थे, और उन तारों को निकट के भवनों से मजबूती से जोड़ रखा था । दूर से यह अन्य पेड़ों जैसा नजर आता था; केवल अन्दर से देखने पर ही कोई देख सकता था कि इसका तना ठोस, मजबूत होने की बजाय खोखला था । कई वर्षों पहले कुछ ऐसा हुआ कि तना धीरे-धीरे कमजोर होना शुरू हो गया था, कुछ इधर से कुछ उधर से । यह रातों-रात ऐसा नहीं हुआ था । यद्यपि, जैसा छोटा पेड़ धीरे-धीरे बड़ा होकर मजबूत पेड़ बनता है, हमें भी उसी प्रकार धीरे-धीरे अपनी क्षमता से अन्दर से मजबूत और भरा हुआ होना चाहिए, न कि इस पेड़ की तरह खोखला ।

|v14

यीशु मसीह के चंगाई के प्रायश्चित द्वारा हमें ऊंचे और मजबूत और खड़े होने की ताकत मिल सकती है और हमारी आत्माएं---ज्योति, ज्ञान, आनन्द, और प्रेम से भरी हो सकती हैं । उसका निमंत्रण सब के लिए है ‘‘सभी को अपने पास बुलाता है, अपनी अच्छाइयों में भाग लेने को कहता है; और अपने पास आने वालों में से वह किसी को अस्वीकार नहीं करता’’ (2 नफी 26:33) । उसका वादा हैः

|v15

‘‘हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा ।

|v16

‘‘मेरे जुआ अपने ऊपर उठा लो; और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं: और तुम अपने मन में विश्वास पाओगे’’ (मत्ती 11:28–29) ।

|v17

इस विश्राम के विषय में अध्यक्ष जोसफ एफ. स्मिथ ने कहा थाः ‘‘मेरी समझ से, इसका अर्थ परमेश्वर के ज्ञान और प्रेम में प्रवेश करना, उसके उद्देश्य और योजना में इतना विश्वास करना, कि हमें पता चले कि हम सही हैं, और हम किसी अन्य वस्तु की तलाश नहीं कर रहे हैं, हम हर तरह के सिद्धान्त की हवा में नहीं बहते, या उन लोगों की धूर्तता और चालाकी द्वारा नहीं फंसते हैं जो कि धोखा देना का इन्तजार करते हैं । हम इस सिद्धान्त के वि

षय में जानते हैं कि यह परमेश्वर की ओर से है, और हम किसी अन्य से इसके विषय में कोई प्रश्न नहीं पूछते हैं; उनकी राय, उनके विचारों और उन के कामों का स्वागत है । वह व्यक्ति जो परमेश्वर में विश्वास के इस स्तर तक पहुंच गया है कि सारा संदेह और भय से निकल गया है, उसने 'परमेश्व र के विश्राम' में प्रवेश कर लिया है'' (*Teachings of Presidents of the Church: Joseph F. Smith* [1998], 56) ।

|v18

अपनी आत्माओं के लिए विश्राम पाने में मन और हृदय की शान्ति शामिल है, जोकि मसीह के सिद्धान्त को सीखने और उनका अनुसरण करने, और दू सरों की सेवा करने और मदद करने में मसीह के अतिरिक्त हाथ बनने से आती है । यीशु मसीह में विश्वास और उसकी शिक्षाओं का पालन करने से हमें सशक्त आशा मिलती है, और यह आशा हमारी आत्माओं के लिए ठोस लंगर बन जाती है । हम अटल और अस्थिर बन सकते हैं । हमारे पास हमे शा के लिए आंतरिक शान्ति हो सकती है; हम प्रभु के आराम में प्रवेश कर सकते हैं । सिर्फ यदि हम ज्योति और सच्चाई से दूर जाते हैं तो, उस पेड़ के समान, हमारी आत्मा की गहराइयों में खालीपन की खोखली अनुभूतियां भर सकती हैं, और हम इस खालीपन को उन वस्तुओं को से भर सकते हैं जिनका कोई स्थाई मूल्य नहीं होता ।

|v19

पृथ्वी पर आने से पूर्व आत्मिक बच्चे के रूप में अपने अस्तित्व और यहां के बाद के अमरता के जीवन की तुलना में, यह पृथ्वी का जीवन सचमुच में ब हुत ही कम क्षणों का है ।

|v20

यद्यपि, यह एक परीक्षण का समय है, लेकिन यह एक अवसरों का समय भी है जब हम निमंत्रण को स्वीकार करके अपने परीक्षा के दिनों को बेकार नहीं कर सकते (देखें 2 नफी 9:27) । विचार जो हमारे मनों के भीतर रहते हैं, अनुभूतियां जो हमारे हृदयों में विकसित होती हैं, और जो कदम उठा ने का हम चुनाव करते हैं, उनका हमारे जीवन पर निर्णायक असर होता है, यहां भी और यहां के बाद भी ।

|v21

जिन कामों की हम योजना बनाते और करते हैं उनके अनन्त परिदृश्य के स्तर को कायम रखने के लिए एक सहायक आदत हमारी दृष्टि को प्रतिदिन ऊपर उठाने के लिए है, विशेषकर यदि जब जिस काम को हमें आज करना चाहिए उसे आने वाले कल पर न डालने की प्रवृति को खोज निकालते हैं ।

|v22

अपनी इस यात्रा में अपने चुनावों में आत्मा के प्रभाव के समर्थन द्वारा हमें मदद मिलती है । अब, यदि हम उस ज्योति और ज्ञान जो हमारे पास है, के विपरीत कार्य करने का चुनाव करते हैं, हमें बुरे विवेक का अनुभव होगा, जिससे सचमुच में अच्छा महसूस नहीं होता है । लेकिन बुरा विवेक एक आ शीष है जिससे हमें तुरन्त पता लग जाता हैं कि यह समय पश्चाताप करने का है । जब हम विनम्र होते हैं और जो सही है उसे करने की इच्छा करते हैं , हम उत्सुकता से तुरन्त मार्ग बदल देंगे, जबकि अन्य जो घमण्डी हैं और जो ''अपने नियम [स्वयं] होते हैं'' (सि. और अनु. 88:35) शैतान को उन हें ''गर्दन पकड़कर एक बड़े चाबुक से मारता हुआ तब तक ले जाता, जब तक वह उन्हें ले जाकर सदा के लिए अपने बन्धन में बान्ध नहीं लेता'' (2 नफी 26:22) जब तक कि पश्चाताप की आत्मा उनके हृदयों में प्रवेश नहीं करती है । बुराई के प्रभावों का अनुसरण करने से कभी शान्ति की अनु भूति नहीं हो सकती क्योंकि शान्ति परमेश्वर का उपहार है और यह केवल परमेश्वर की आत्मा के द्वारा ही आ सकती है । ''पाप कभी भी आनन्द दाय ी नहीं हुआ है'' (अलमा 41:10) ।

|v23

हमारे प्रतिदिन के कामों में, अक्सर छोटे और सरल बातें दूर-गामी परिणाम डालती हैं (देखें अलमा 37:6–
7) । हम क्या कहते हैं, हम कैसे काम करते हैं, और हम कैसे प्रतिक्रिया करते हैं न केवल हम पर बल्कि हमारे आसपास के लोगों पर भी प्रभाव डालें गे । हम काम बना भी सकते हैं, या काम बिगाड़ भी सकते हैं । एक सरल और सकारात्मक उदाहरण मेरी दादी के विषय में कही कहानी है । उन्होंने

अपने एक बच्चे को कुछ अन्डे खरीदने भेजा । भरोसेमंद बच्चा घर आते समय सड़क पर शायद मस्ती से आ रहा था, जब बच्चा घर पहुंचा अधिकतर अ न्डे टुटे हुए थे । परिवार का एक मित्र वहां पर था और उसने मेरी दादी को कहा बच्चे को इस हरकत के लिए बुरी तरह डांटो । इसके स्थान पर, दादी ने शान्ति से और समझदारी से कहा, ''नहीं, डांटने से अन्डे फिर से नहीं जुड़ जाएंगे । हम ठीक अन्डे उपयोग करेंगे और बाकी का पेनकेक बनाएं जि से हम मिलकर आनन्द से खाएंगे'' ।

|v24

जब हम प्रतिदिन की छोटी और सरल बातों को बुद्धिमानी और प्रेरणादायक तरीके से संभालना सीख जाते हैं, इसका परिणाम सकारात्मक प्रभाव होता है जो हमारी आत्मा में समन्वय को मजबूत करेगा और हमारे आसपास के लोगों से रिश्तों को बनाएगा और मजबूती देगा । ऐसा इसलिए होगा क्योंकि जो कुछ अच्छा करने का निमंत्रण देता है ''मसीहा की शक्ति और देन के द्वारा भेजा जाता है; इसलिए [तुम्हें] पूर्ण रूप से जानना चाहिए कि यह सब ईश्वरीय है'' (मरोनी 7:16) ।

|v25

जिस खोखले पेड़ की मैंने आपसे बात की थी अब खड़ा नहीं है । कुछ युवाओं ने उसकी खाली जगह में पटाखे जला दिए थे, जिससे पेड़ में आग लग गई । इसे बचाया नहीं जा सका और नीचे गिरा दिया गया । उन बातों से सावधान रहना जो भीतर से बाहर की ओर नाश करती है, चाहे बड़ी हों या छोटी ! इनके विस्फोटक प्रभाव हो सकते हैं और आत्मिक मृत्यु का कारण बन सकते हैं ।

|v26

इसके स्थान पर हम उन बातों पर केन्द्रीत हों जो अनन्तता तक लगातार मन और हृदय की शान्ति देंगी । फिर हमारा ''आत्मविश्वास परमेश्वर की उपस्थिति में मजबूत होगा'' (सि. और अनु.121:45) । प्रभु के विश्राम में प्रवेश करने का वादा, शान्ति के उपहार को पाना, जो कि अस्थाई सांसारिक सन्तुष्टि से बेहतर है । यह वास्तव में स्वर्गीय उपहार हैः ''मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देताः तुम्हारा मन न घबराए और न डरे'' (यूहन्ना 14:27) । उसके पास चंगा करने की और आत्मा को मजबूत करने की शक्ति है । वह यीशु मसीह है, जिसकी मैं गवाही देता हूं, यीशु मसीह के नाम में, आमीन ।

|v27

लियाहोना

|v28

नवंबर 2010